18-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करने के लिए सदा इसी स्मृति में रहो कि हम किसके बच्चे हैं, अगर बाप को भूले तो सुख गुम हो जायेगा"

प्रश्नः- बाप के मिलने की स्थाई खुशी किन बच्चों को रहती है?

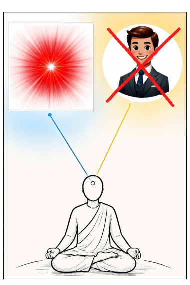

उत्तर:- जिन बच्चों ने एक से अपने सर्व सम्बन्ध जोड़े हैं, जो एक बाप की याद में रहने की ही मेहनत करते हैं, किसी देहधारी को याद नहीं करते उन्हें ही स्थाई खुशी रहती है। अगर देहधारी की याद है तो बहुत रोना पड़ेगा। विश्व का मालिक बनने वाले कभी रोते नहीं।

गीत:-बचपन के दिन भुला न देना...... Click

ओ ओ ओ ओ , बचपन के दिन भूला ना देना
ओ ओ ओ ओ , बचपन के दिन भूला ना देना
आज हंसे कल रूला ना देना
आज हंसे कल रूला ना देना
ओ ओ ओ ओ , बचपन के दिन भूला ना देना
लम्बे हैं जीवन के रस्ते
आओ चले हम गाते हंसते
लम्बे हैं जीवन के रस्ते
आओ चले हम गाते हंसते
गाते हंसते

आ आ आ आ
दूर देश एक महल बनायें
प्यार का जिस में दीप जलाए
दूर देश एक महल बनायें
प्यार का जिस में दीप जलाए, दीप जलाए
दीप जलाकर बुझा ना देना
आज हंसे कल रुला ना देना
ओ ओ ओ ओ , बचपन के दिन भूला ना देना

रुत बदले या जीवन बीते
दिल के तराने हों ना पुराने
रुत बदले या जीवन बीते
दिल के तराने हों ना पुराने
हा हा हा ... हा हा हा हा हा ....
नैनो में बन कर सपन सुहाने
आएंगे एक दिन यही ज़माने

आ.... हा ....आ .....आ
नैनो में बन कर सपन सुहाने
आएंगे एक दिन यही ज़माने, यही ज़माने
याद हमारी मिटा ना देना
आज हंसे कल रूला ना देना
ओ ओ ओ , बचपन के दिन भूला ना देना

18-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

ओम् शान्ति। बाप कहते हैं मीठे बच्चों - हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, यह भूलो मत। यह भूले तो अपने को रुला देंगे। छी-छी दुनिया में बुद्धि चली जायेगी। बाप की याद रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता है। वह सुख, बाप को भूल जाने से गुम हो जायेगा। हरदम याद रहना चाहिये कि हम बाबा के बच्चे हैं, नहीं तो अपने को रुला देंगे। सब भगवान के बच्चे हैं, सब कहते हैं हे बाबा, हे परम पिता परमात्मा रक्षा करो। परन्तु बाप से रक्षा कब होती है - यह किसको भी पता नहीं है। साधू-सन्त आदि कोई भी नहीं जानते कि बाप से हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति कब मिलनी है क्योंकि भगवान को ही कण-कण में कह दिया है। अब तुम बच्चे बेहद के बाप को जान गये हो। मोस्ट बील्वेड बाप है, उससे प्यारी वस्तु और कोई होती नहीं। ऐसे बाप को न जानना बड़ी भारी भूल है। शिव जयन्ती क्यों मनाते हैं, वह कौन है? यह भी कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं तुम कितने बेसमझ बन गये हो। माया रावण ने तुमको क्या बना दिया है! अभी तुम बच्चे जानते हो यह हमारी जन्म भूमि है। मैं हर 5

Choice is All yours...

चढ़ाओ नशा...

Example

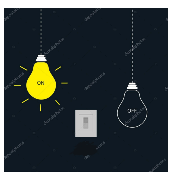

याद OFF

नेती - नेती

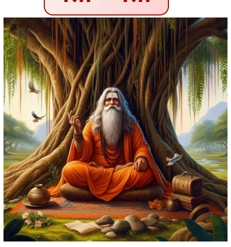

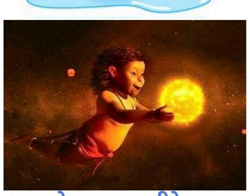

आपको खा जाऊ मीठे बाबा...

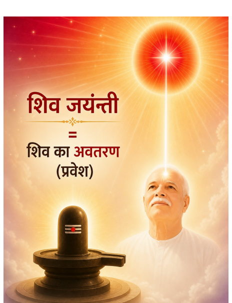

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

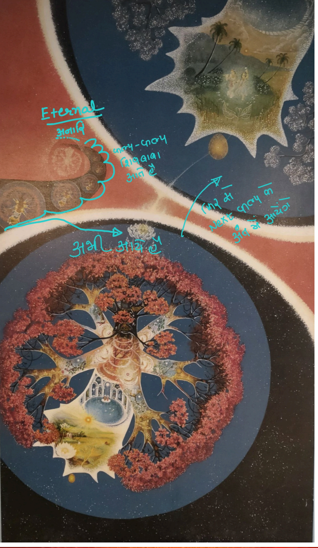

बेहद का नाटक

Multi Trillion dollar Question

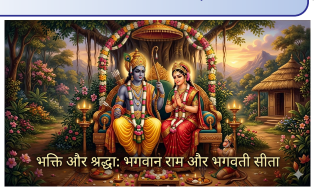

हे भगवान
दुखहर्ता सुखकर्ता

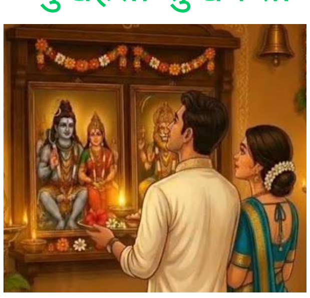

हज़ार वर्ष के बाद आता हूँ। वह फिर कह देते 40 हज़ार वर्ष बाद जब यह कलियुग पूरा होगा तब आयेंगे। चित्र भी दिखाया जाता है त्रिमूर्ति का। त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है परन्तु तीन मूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को कोई नहीं जानते। ब्रह्मा क्या करके गया? विष्णु और शंकर क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं, कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही घोर अन्धियारे में हैं। बाप है रचयिता। उनकी यह कितनी बड़ी रचना है। कितना बेहद का नाटक है। इसमें बेहद के मनुष्य रहते हैं। आज से 5 हज़ार वर्ष पहले जब सतयुग था, भारत में जब इन लक्ष्मी -नारायण का राज्य था तो और कोई राज्य नहीं था। भगवती श्री लक्ष्मी, भगवान श्री नारायण को कहा जाता है। राम-सीता को भी भगवान राम, भगवती सीता कहते हैं। अब यह भगवान नारायण, भगवती लक्ष्मी कहाँ से आये? राज्य करके गये हैं। परन्तु उनकी जीवन कहानी तो एक भी नहीं जानते। सिर्फ गाते रहते हैं हे भगवान दु:ख हर्ता सुख कर्ता। परन्तु यह किसकी बुद्धि में नहीं आता - वह दु:ख हर्ता, सुख कर्ता कैसे है। कौन-सा सुख

सबको दिया? और कब सबका दु:ख हरा? कुछ भी नहीं जानते।

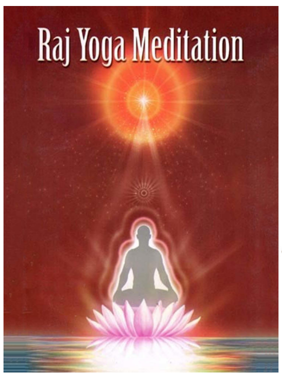

तुम बच्चे अभी यहाँ राजयोग सीख रहे हो - भगवती लक्ष्मी, भगवान नारायण बनने के लिए।

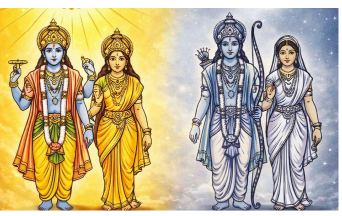

जानते हैं भगवती सीता, भगवान राम भी बनने का है। 8 जन्म सतयुग में पूरे करके फिर राम-सीता के राज्य में आने वाले हैं। 21 जन्म के लिए बेहद की राजाई तुम यहाँ स्थापन कर रहे हो। तुम भगवती भगवान स्वर्ग के मालिक बन रहे हो। स्वर्ग कोई आसमान में नहीं है। यह भी किसको पता नहीं है। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। कहते हैं फलाना स्वर्ग पधारा। परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। अच्छा क्या क्रिश्चियन, बौद्धी सब हेविन में जायेंगे? वह बाद में आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं। तो फिर वह स्वर्ग में कैसे आ सकते? स्वर्ग किसको कहा जाता, यह भी उनको पता नहीं है। संन्यासी लोग कहते ज्योति ज्योत समाया। कोई फिर कहते

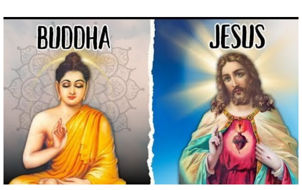

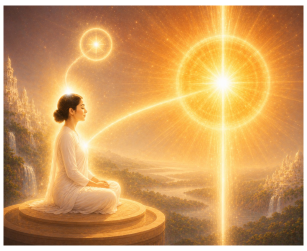

निर्वाणधाम गया। निर्वाण भी तो लोक है ना। वह तो निवास स्थान है। ज्योति ज्योत में लीन होने की बात ही नहीं। ज्योति में मिल जाए तो फिर तो आत्मा ही खत्म हो जाए। खेल ही खत्म हो जाता है। इस ड्रामा से कोई भी आत्मा छूट नहीं सकती।

ये पक्का समझ लो..

कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते। गीत का अर्थ भी कोई समझते नहीं हैं। न जीवनमुक्ति का अर्थ समझते हैं, न आत्मा-परमात्मा का अर्थ समझते हैं।

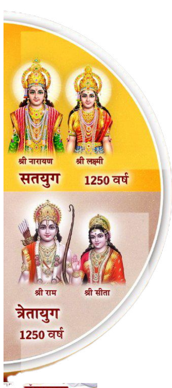

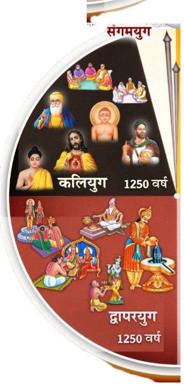

बाप कहते हैं - तुम्हारी शक्ल तो मनुष्य की है, जो इन देवताओं की भी थी। सतयुग आदि में देवतायें थे। उन्हों का 2500 वर्ष राज्य चला। बाकी 2500 वर्ष की बात है, जिसमें और सब धर्म आते हैं। 5 हज़ार वर्ष के बदले मनुष्य कह देते लाखों वर्ष कल्प वृक्ष की आयु है। परन्तु तुम्हारी बात समझने के लिए भी नहीं आयेंगे। हाँ, आयेंगे भी वही, जिन्होंने कल्प पहले आकर समझा होगा। पहले

18-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तो समझाना है - एक है हद का संन्यास, जो संन्यासी लोग घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते हैं, पहले-पहले वह सतोप्रधान थे। फिर अब तमोप्रधान बने हैं तो जंगलों से लौटकर आए बड़े-बड़े महल बनाये हैं। इन संन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरूर है। भारत की सेवा की है। यह संन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। यह भी ड्रामा बना हुआ है। उन्हों में पहले पवित्रता की ताकत थी, जिससे भारत को थमाया है। इन देवताओं का जब राज्य था तो भारत कितना साहूकार था। इन्हों के इतने बड़े-बड़े हीरे-जवाहरों के महल थे। वह सब कहाँ गये? सब नीचे चले गये। लंका और द्वारिका के लिए कहते हैं - समुद्र के नीचे चली गई। अभी तो है नहीं। सोने के महल आदि सब थे ना। जब मन्दिरों आदि में हीरे-जवाहरात लगा सकते हैं, तो वहाँ क्या नहीं होगा! कितनी तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। बाबा फिर से आया हुआ है। कहते हैं बाप को याद करो। याद एक को ही करना है, जिससे विकर्म विनाश

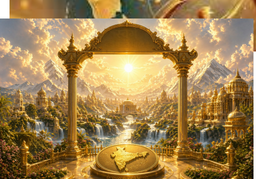

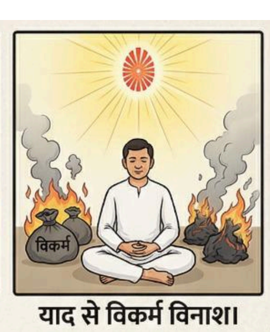

None but Only One

रणा सेवा M.imp.

होते हैं। परन्तु वह भूल जाते हैं और देहधारी की याद आ जाती है। देहधारी की याद से तो कुछ भी फायदा नहीं। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो। किसी भी देहधारी को याद नहीं करो। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना.... एक बाप की याद से ही कमाई है। हम शिवबाबा के बच्चे हैं, उनसे वर्सा लेना है। इस समय बाप को याद नहीं किया तो फिर बहुत पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा। विश्व के मालिक बनने वालों को रोने की क्या दरकार है। तुम बाप को भूलते हो तब ही माया थप्पड़ लगाती है इसलिए बाबा बार-बार समझाते हैं कि बाप को और वर्से को याद करो। अमरनाथ ने अमरपुरी में एक पार्वती को तो बैठ अमरकथा नहीं सुनाई होगी। जरूर बहुत होंगे। जो भी मनुष्य मात्र हैं सबको बाप समझाते हैं कि अब पतित मत बनो, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो। वहाँ स्वर्ग में कोई विकार नहीं होते। अगर वहाँ भी विकार होता तो फिर स्वर्ग और नर्क में फर्क क्या हुआ? देवी-देवताओं की महिमा गाते हैं - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण... हैं। भगवान आकर भगवान-

ये तो पक्का कर लो..

Attention Please..!

समझा?

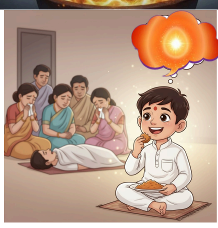

Simple Logic

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

18-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Only One

भगवती ही बनायेंगे, सिवाए भगवान के कोई बना न सके। भगवान तो एक ही है। गाया भी जाता है - भगवान-भगवती की राजधानी। यथा राजा-रानी तथा प्रजा भी वही होगी। परन्तु भगवान-भगवती कहा नहीं जाता इसलिए कहा जाता है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। यह किसको पता नहीं है। इनकी (ब्रह्मा की) आत्मा को भी बाप समझाते हैं। एक बाप की, एक दादा की - दो आत्मायें हैं ना। एक आत्मा 84 जन्म लेती है, दूसरी आत्मा पुनर्जन्म रहित है। बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं। एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं। बाप तुमको समझाते हैं - मैंने इनमें प्रवेश किया है। यह 84 जन्म भोग आये हैं। अब इनके बहुत जन्मों का यह अन्तिम जन्म है। अब मैं निराकार हूँ तो कैसे आकर बच्चों को राजयोग सिखलाऊं? प्रेरणा से तो कुछ हो न सके। श्रीकृष्ण भगवानुवाच तो हो न सके। वह कैसे आ सकता है? वह तो है ही सतयुग का प्रिन्स, 16 कला सम्पूर्ण... फिर त्रेता में होते हैं 14 कला सम्पूर्ण, फिर द्वापर में श्रीकृष्ण को क्यों

But we know, How Lucky & Great we are..!

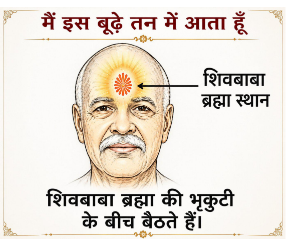

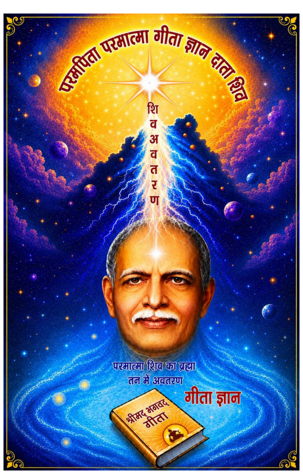

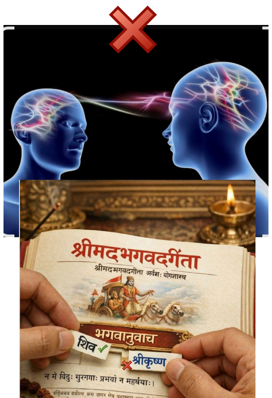

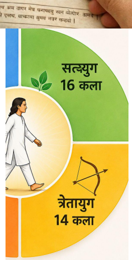

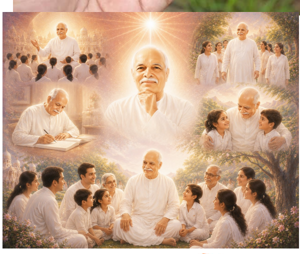

ले गये हैं? उनको तो पहले आना चाहिए। बाप समझाते हैं - पहले, बाप को याद करो। नहीं तो माया एकदम थप्पड़ मार देगी। छुईमुई का एक झाड़ होता है। हाथ लगाओ तो मुरझा जाये। तुम्हारा भी ऐसा ही हाल होता है, बाप को याद नहीं किया और खलास। गीत में भी सुना - बचपन के दिन भुला नहीं देना। बाप को भूले तो कहाँ न कहाँ चोट लग जायेगी। बाप कहते हैं - तुम हमारे बच्चे हो ना। यह शरीर तो विष से पैदा हुआ है। वह इनके लौकिक माँ-बाप हैं। यह (शिवबाबा) तो है पारलौकिक बाप और इनको (ब्रह्माबाबा) फिर अलौकिक बाप कहा जाता है। यह (ब्रह्माबाबा) हद का था, फिर बेहद का बन गया। अभी देखो यह लौकिक बच्ची (निर्मल-शान्ता) बैठी है। यह लौकिक भी है, अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है। बाकी शिवबाबा के तो भाई-बहिन है नहीं। न लौकिक, न अलौकिक, न पारलौकिक। कितना फ़र्क है। एक बाप का बनना मासी का घर नहीं है। ऐसे बाप से सम्बन्ध जोड़ना है, टाइम लगता है। शिवबाबा की याद में रहना बड़ी मेहनत है। कई 50 वर्ष से रहने वाले भी सारा

समझा?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

For New commers

So, you can surpass them No matter How New you are.. The only thing is Follow Father Strictly.

So, Be Mentally very very very Strong

दिन शिवबाबा को याद भी नहीं करते, ऐसे भी हैं। और सबको भूल एक को याद करना बहुत-बहुत मेहनत है। कोई 1 परसेन्ट याद करते हैं, कोई 2 परसेन्ट, कोई 1/2 परसेन्ट भी मुश्किल याद करते हैं। यह बड़ी भारी मंज़िल है। तो बाप समझाते हैं - बचपन को नहीं भूलना। बाप से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। तुम जानते हो हम जीते जी मरकर बाप के आकर बने हैं - नई दुनिया में जाने के लिए। तो तुम्हें स्थाई खुशी रहनी चाहिए, "ओहो! हम डबल सिरताज बनेंगे!" मनुष्य थोड़ेही जानते हैं कि सतयुग में इन देवताओं को 16 कला सम्पूर्ण और 14 कला सम्पूर्ण क्यों कहते हैं? कुछ भी नहीं जानते हैं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र आदि फिर भी बनेंगे। यह हठयोग, तीर्थ यात्रा आदि सब फिर भी होंगे। परन्तु इससे क्या होगा? क्या हेविन में जायेंगे? नहीं, बहुत रिद्धि-सिद्धि से काम करते हैं। रिद्धि-सिद्धि वाले बहुत हैं। हज़ारों मनुष्य उनके पिछाड़ी पड़ते रहते हैं। रिद्धि-सिद्धि से बहुत घड़ियाँ आदि चीज़ें निकालते हैं। यह थोड़ेही समझते कि यह अल्पकाल के लिए सब हैं। इसमें बहुत मेहनत

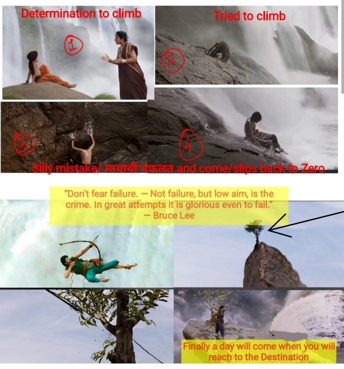

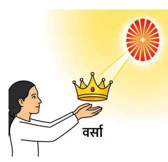

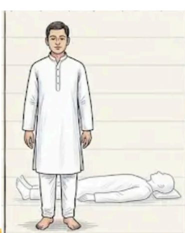

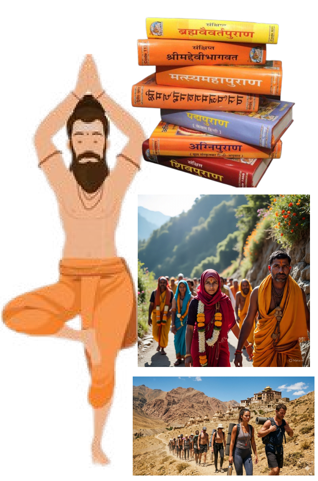

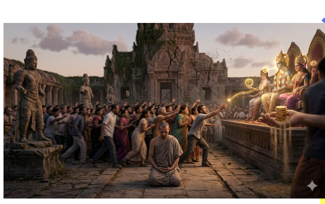

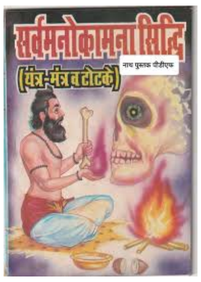

करनी पड़ती है। यह रिद्धि-सिद्धि आदि सीखने की भी किताब होती है। कितने लाखों मनुष्य उनके पिछाड़ी पड़ते हैं। तुम बच्चे जानते हो हमको बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है। इन आंखों से जो कुछ देखते हो वह नहीं रहेगा। बाप समझाते हैं - तुम अशरीरी आये थे फिर शरीर साथ पार्ट बजाया। अगर 84 लाख का हिसाब-किताब बतायें तो 12 मास लग जायें। हो ही नहीं सकता। 84 जन्मों का हिसाब-किताब बताना तो बिल्कुल सहज है। तुम 84 का चक्र लगाते रहते हो। सूर्यवंशी हैं तो चन्द्रवंशी नहीं। सूर्यवंशी घराना पूरा हुआ फिर चन्द्रवंशी.... बनें।

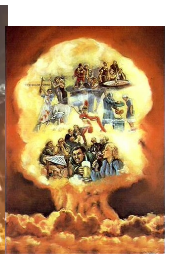

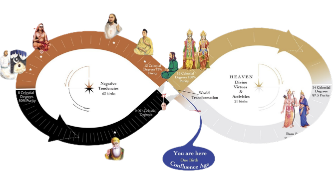

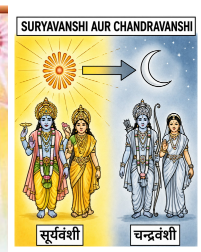

अभी तुम जानते हो हम हैं ब्राह्मण वंशी फिर देवता वंशी बनना है, इसलिए हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं। फिर सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे। अभी अपने 84 जन्मों की स्मृति आई है। यह चक्र भी याद करना पड़े। बाप को याद करने से एवर

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

18-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हेल्दी, एवर वेल्दी बनेंगे। पाप कट जायेंगे। चक्र को जानने से चक्रवर्ती बन जायेंगे। तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया कब्रिस्तान बननी है। *Mind very well...* कुछ भी नहीं रहेगा। खत्म हो जायेगा। राम गयो, रावण गयो.... राम का कितना छोटा परिवार होगा सतयुग में। अभी रावण का कितना बड़ा परिवार है। बच्चे जानते हैं कि यह राजधानी स्थापन हो रही है। हर बात में पुरुषार्थ फर्स्ट है। बाप पुरुषार्थ कराते हैं - बच्चे मुझे याद करो। जिस बाप से अथाह स्वर्ग की बादशाही मिलती है, पुछो अपने आप से... क्या उनको याद नहीं करेंगे? बाप स्मृति दिलाते हैं कि तुम स्वर्ग के मालिक थे। अब फिर से पुरुषार्थ कर स्वर्ग के मालिक बनो। अच्छा!

Point for Life time

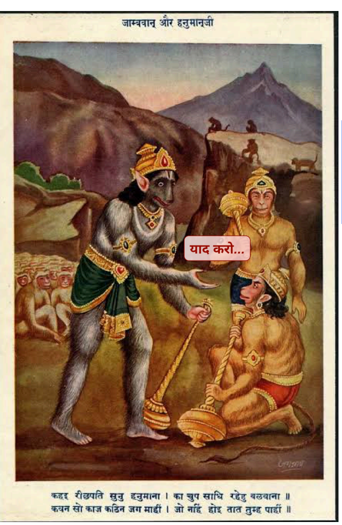

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

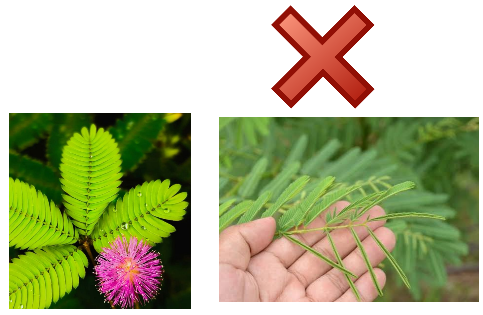

1) कभी भी किसी बात में छुई-मुई नहीं बनना है। ईश्वरीय बचपन को भूल मुरझाना नहीं है। इन आंखों से जो कुछ दिखाई देता है, उसे देखते भी नहीं देखना है।

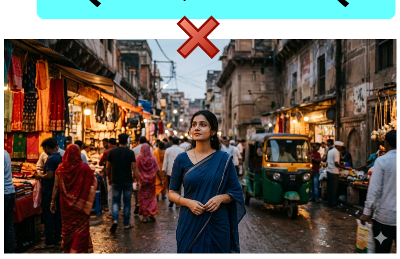

आंखें जो देखती है वह सब है मिटने वाले
चलना है निज वतन जहां के प्रभु है रहने वाले
अपनी नजर टिकाइए उस परमधाम पर
पल भर निकालिए प्रभु के भी नाम पर

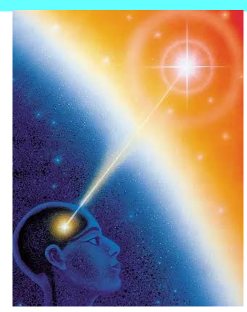

2) एक बाप की याद में ही कमाई है इसलिए देहधारियों को याद कर रोना नहीं है। बाप और वर्से को याद कर विश्व की बादशाही लेनी है।

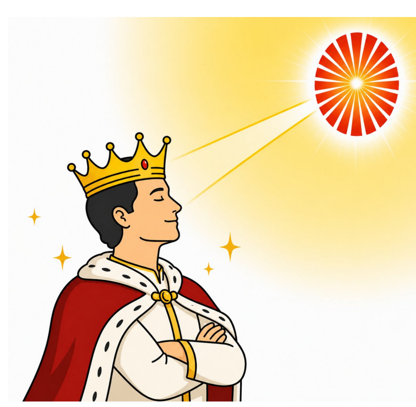

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

18-06-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान:- श्रेष्ठ मत के आधार पर मायावी संगदोष से परे रहने वाले शक्ति स्वरूप भव

Finale Achievement

बच्चों की एक कम्पलेन रहती है कि सम्बन्धी नहीं सुनते, संग अच्छा नहीं है, इस कारण शक्तिशाली नहीं बन सकते।

लेकिन श्रेष्ठ मत के आधार पर ज्ञान स्वरूप, शक्ति स्वरूप के वरदानी बन अपनी स्थिति को अचल बनाओ। साक्षी होकर हर एक का पार्ट देखो। अपने सतोगुणी पार्ट में स्थित रहो। सदा बाप के संग में रहो

तो तमोगुणी आत्मा के संग के रंग का प्रभाव पड़ नहीं सकता।

Definition of

स्लोगन: कर्मयोगी वह है जो कर्म के कल्प वृक्ष की डाली पर बैठ कर्म करते भी उपराम स्थिति में रहे।

ये अव्यक्त इशारे -

सदा हर्षित रहने के लिए

अपनी नेचर को सरल बनाओ, सहनशील बनो।

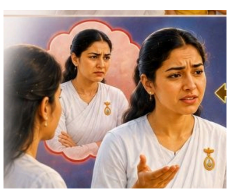

जैसे कोई की विशेष नेचर होती है, उस नेचर के वश न चाहते भी चलते रहते हैं। कहते हैं चाहती नहीं हूँ लेकिन मेरी यह नेचर है।

ऐसे आप बच्चों की सरल नेचर हो जो सबको अनुभव हो कि यह सहज योगी, स्वत: योगी हैं।

क्या करूँ, कैसे योग लगाऊं .. यह बातें खत्म।

हैं ही सदा सहयोगी अर्थात् योगी। इसी एक बात को नेचर और नैचुरल करने से सभी सबजेक्ट में परफेक्ट हो जायेंगे।

m.m.m....imp.

Note it down

Shiv भगवान उवाच:

If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM

WhatsApp

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans May 26 → Click

All अव्यक्त इशारे May 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे

क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

ओम शांति ,
1 जून से टीम हाइलाइटेड मुरली ने एक नई पहल शुरू की है इस Mind map के रूप में।

इस नई पहल का उद्देश्य यह है कि
आप दिन में कर्म करते हुए या ट्रैवलिंग करते हुए कहीं पर भी, थोड़े से ही समय में ज्ञान,योग,धारणा और सेवा जो हमारे चार मुख्य सब्जेक्ट है उसके main Points को Quickly Revise कर सके और उसका मंथन करते हुए बाबा की याद में एवं स्वदर्शन चक्र फिराने में डूबे रह सके जिससे कि व्यर्थ के आने की कोई मार्जिन ही न रहे।

मीठे बापदादा हमसे चाहते है कि "मेरा हर एक बच्चा व्यर्थ से मुक्त बन जाए।" और व्यर्थ मिटाने का सबसे सरल साधन है निरन्तर समर्थन चिन्तन। और मुरली है सर्व समर्थ साधन - क्योंकि मुरली है सर्व शक्तिमान शिवबाबा का मन। तो मुरली के मंथन में व्यस्त रहना अर्थात उस Supreme powerhouse से अपने मन की तार को जोड़ना।

चूं की यह एकदम नई सेवा है तो आप अपना feedback अवश्य भेजें ताकि Team इस सेवा का एनालिसिस कर के सेवा में improvement कर सके एवं इस सेवा की दिशा को भी जान सके (सेवा जिस उद्देश से शुरू की है वो सार्थक हो रहा है कि नहीं)।

आपका Feedback इस गूगल फॉर्म में submit कीजिए।

Click

इस mind map में,
मुरली की Main Body को ही ध्यान में लिया गया है।
अर्थात सार,प्रश्नोत्तर,धारणा, वरदान, स्लोगन ,अव्यक्त इशारों को include नहीं किया है।

SM 18.06.2026

- **ज्ञान**
  - **आत्मा**
    - ज्योति ज्योत में लीन होने की बात ही नहीं।
      - ज्योति में मिल जाए तो फिर तो आत्मा ही खत्म हो जाए। खेल ही खत्म हो जाता है।
    - इस ड्रामा से कोई भी आत्मा छूट नहीं सकती। कोई भी मोक्ष को पा नहीं सकते।
    - एक आत्मा 84 जन्म लेती है, दूसरी आत्मा पुनर्जन्म रहित है।
  - **परमात्मा**
    - बाप की याद रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता है।
    - बाप स्मृति दिलाते हैं कि तुम स्वर्ग के मालिक थे। अब फिर से पुरुषार्थ कर स्वर्ग के मालिक बनो
    - **एक बाप का बनना मासी का घर नहीं है। ऐसे बाप से सम्बन्ध जोड़ना है, टाइम लगता है।**
    - बाप समझाते हैं तुम अशरीरी आये थे फिर शरीर साथ पार्ट बजाया।
    - बाप है रचयिता। उनकी यह कितनी बड़ी रचना है। कितना बेहद का नाटक है।
    - बाप कभी पुनर्जन्म नहीं लेते हैं।
      - एक ही बार आकर सारे विश्व को पवित्र बनाने के लिए हमको राजयोग सिखाते हैं।
    - अब मैं निराकार हूँ तो कैसे आकर बच्चों को राजयोग सिखलाऊं?
      - प्रेरणा से तो कुछ हो न सके।
    - बाप कहते हैं
      - बाप कहते हैं मीठे बच्चों हम बेहद के बाप के बच्चे हैं, यह भूलो मत।
        - यह भूले तो अपने को रुला देंगे।
        - छी-छी दुनिया में बुद्धि चली जायेगी
        - सुख, बाप को भूल जाने से गुम हो जायेगा
      - बाप कहते हैं - तुम्हारी शक्ल तो मनुष्य की है, जो इन देवताओं की भी थी।
    - मोस्ट बील्वेड बाप है, उससे प्यारी वस्तु और कोई होती नहीं।
  - **तुम जानते हो**
    - तुम जानते हो हम हैं ब्राह्मण वंशी फिर देवता वंशी बनना है, इसलिए हम पढ़ाई पढ़ रहे हैं।
      - फिर सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते वैश्य, शूद्र वंशी बनेंगे।
    - तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया कब्रिस्तान बननी है। कुछ भी नहीं रहेगा। खत्म हो जायेगा।
    - बच्चे जानते हैं कि यह राजधानी स्थापन हो रही है।
    - तुम जानते हो हम जीते जी मरकर बाप के आकर बने हैं- नई दुनिया में जाने के लिए।
    - तुम बच्चे जानते हो हमको बाबा से स्वर्ग का वर्सा मिलता है।
    - अब तुम बच्चे बेहद के बाप को जान गये हो।
  - **तुम बच्चे**
    - 8 जन्म सतयुग में पूरे करके फिर राम-सीता के राज्य में आने वाले हैं।
    - 21 जन्म के लिए बेहद की राजाई तुम यहाँ स्थापन कर रहे हो।
    - तुम भगवती भगवान स्वर्ग के मालिक बन रहे हो।
  - **Special points**
    - हर बात में पुरुषार्थ फर्स्ट है।
    - **तुम्हें स्थाई खुशी रहनी चाहिए, ओहो! हम डबल सिरताज बनेंगे!**
    - **हरदम याद रहना चाहिये कि हम बाबा के बच्चे हैं, नहीं तो अपने को रुला देंगे।**
    - छुईमुई का एक झाड़ होता है। हाथ लगाओ तो मुरझा जाये।
      - **तुम्हारा भी ऐसा ही हाल होता है, बाप को याद नहीं किया और खलास।**
    - बाकी शिवबाबा के तो भाई-बहिन है नहीं।
      - न लौकिक, न अलौकिक, न पारलौकिक।
    - इनकी (ब्रह्मा की) आत्मा को भी बाप समझाते हैं। एक बाप की, एक दादा की - दो आत्मायें हैं ना। एक आत्मा 84 जन्म लेती है, दूसरी आत्मा पुनर्जन्म रहित है।
  - **ब्रह्मा बाबा**
    - यह शरीर तो विष से पैदा हुआ है। यह इनके लौकिक माँ-बाप हैं।
      - यह तो है पारलौकिक बाप और इनको फिर अलौकिक बाप कहा जाता है।
      - यह हद का था, फिर बेहद का बन गया।
    - अभी देखो यह लौकिक बच्ची (निर्मल-शान्ता) बैठी है।
      - यह लौकिक भी है, अलौकिक भी है, पारलौकिक भी है।

ज्ञान 2

- **कहावतें**
  - राम गयो, रावण गयो....
  - अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना....
- **भक्ति**
  - साधू-सन्त आदि कोई भी नहीं जानते कि बाप से हमको मुक्तिजीवनमुक्ति कब मिलनी है क्योंकि भगवान को ही कण-कण में कह दिया है।
  - वह फिर कह देते 40 हज़ार वर्ष बाद जब यह कलियुग पूरा होगा तब आयेंगे।
  - त्रिमूर्ति मार्ग नाम भी रखा है परन्तु तीन मूर्ति ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को कोई नहीं जानते।
  - शिव जयन्ती क्यों मनाते हैं, वह कौन है? यह भी कोई नहीं जानते।
  - स्वर्ग किसको कहा जाता, यह भी उनको पता नहीं है।
  - 5 हज़ार वर्ष के बदले मनुष्य कह देते लाखों वर्ष कल्प वृक्ष की आयु है।
  - अमरनाथ ने अमरपुरी में एक पार्वती को तो बैठ अमरकथा नहीं सुनाई होगी।
- **संन्यास**
  - पहले तो समझाना है एक है हद का संन्यास, जो संन्यासी लोग घरबार छोड़ जाए जंगल में रहते हैं,
  - पहले-पहले वह सतोप्रधान थे। फिर अब तमोप्रधान बने हैं तो जंगलों से लौटकर आए बड़े-बड़े महल बनाये हैं।
  - इन संन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरूर है।
    - भारत की सेवा की है।
  - यह संन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता।
    - यह भी ड्रामा बना हुआ है।
  - उन्हों में पहले पवित्रता की ताकत थी, जिससे भारत को थमाया है।
- **फरमान**
  - इस समय बाप को याद नहीं किया तो फिर बहुत पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा।
    - विश्व के मालिक बनने वालों को रोने की क्या दरकार है।
- **माया**
  - बाप कहते हैं तुम कितने बेसमझ बन गये हो। माया रावण ने तुमको क्या बना दिया है!
  - बाप को भूलते हो तब ही माया थप्पड़ लगाती है
  - बाप समझाते हैं - पहले, बाप को याद करो। नहीं तो माया एकदम थप्पड़ मार देगी
- **Characters**
  - लक्ष्मी-नारायण
    - आज से 5 हज़ार वर्ष पहले जब सतयुग था, भारत में जब इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो और कोई राज्य नहीं था।
    - भगवती श्री लक्ष्मी, भगवान श्री नारायण को कहा जाता है
    - यह भगवान नारायण, भगवती लक्ष्मी कहाँ से आये? राज्य करके गये हैं।
    - किसकी बुद्धि में नहीं आता - वह दु:ख हर्ता, सुख कर्ता कैसे है। कौन-सा सुख सबको दिया? और कब सबका दु:ख हरा? कुछ भी नहीं जानते
    - तुम बच्चे अभी यहाँ राजयोग सीख रहे हो - भगवती लक्ष्मी, भगवान नारायण बनने के लिए।
  - राम-सीता
    - राम-सीता को भी भगवान राम, भगवती सीता कहते हैं

योग

- बाप और वर्से को याद कर विश्व की बादशाही लेनी है।
- यह चक्र भी याद करना पड़े। बाप को याद करने से एवर हेल्दी, एवर वेल्दी बनेंगे।
  - पाप कट जायेंगे।
  - चक्र को जानने से चक्रवर्ती बन जायेंगे
- बाप पुरुषार्थ कराते हैं - बच्चे मुझे याद करो।
  - जिस बाप से अथाह स्वर्ग की बादशाही मिलती है, क्या उनको याद नहीं करेंगे?
- शिवबाबा की याद में रहना बड़ी मेहनत है
- सबको भूल एक को याद करना बहुत-बहुत मेहनत है।
  - कोई 1 परसेन्ट याद करते हैं, कोई 2 परसेन्ट, कोई 1/2 परसेन्ट भी मुश्किल याद करते हैं।
- बाप की याद रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता है।
- कहते हैं बाप को याद करो। याद एक को ही करना है,
  - जिससे विकर्म विनाश होते हैं।
- बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो।
  - किसी भी देहधारी को याद नहीं करो।
- एक बाप की याद से ही कमाई है।
- कहते हैं बाप को याद करो। याद एक को ही करना है, जिससे विकर्म विनाश होते हैं। परन्तु वह भूल जाते हैं और देहधारी की याद आ जाती है।

धारणा

- कभी भी किसी बात में छुई मुई नहीं बनना है। ईश्वरीय बचपन को भूल मुरझाना नहीं है।
- इन आंखों से जो कुछ दिखाई देता है, उसे देखते भी नहीं देखना है।
- एक बाप की याद में ही कमाई है इसलिए देहधारियों को याद कर रोना नहीं है।
- इस समय बाप को याद नहीं किया तो फिर बहुत पछताना पड़ेगा, रोना पड़ेगा।
- कितनी तुम बच्चों को खुशी होनी चाहिए। बाबा फिर से आया हुआ है
- बाप को भूले तो कहाँ न कहाँ चोट लग जायेगी।
- जो भी मनुष्य मात्र हैं सबको बाप समझाते हैं कि अब पतित मत बनो, यह अन्तिम जन्म पवित्र बनो।